॥ श्री राज श्यामा जी सदा सहाय ॥

भजन माला

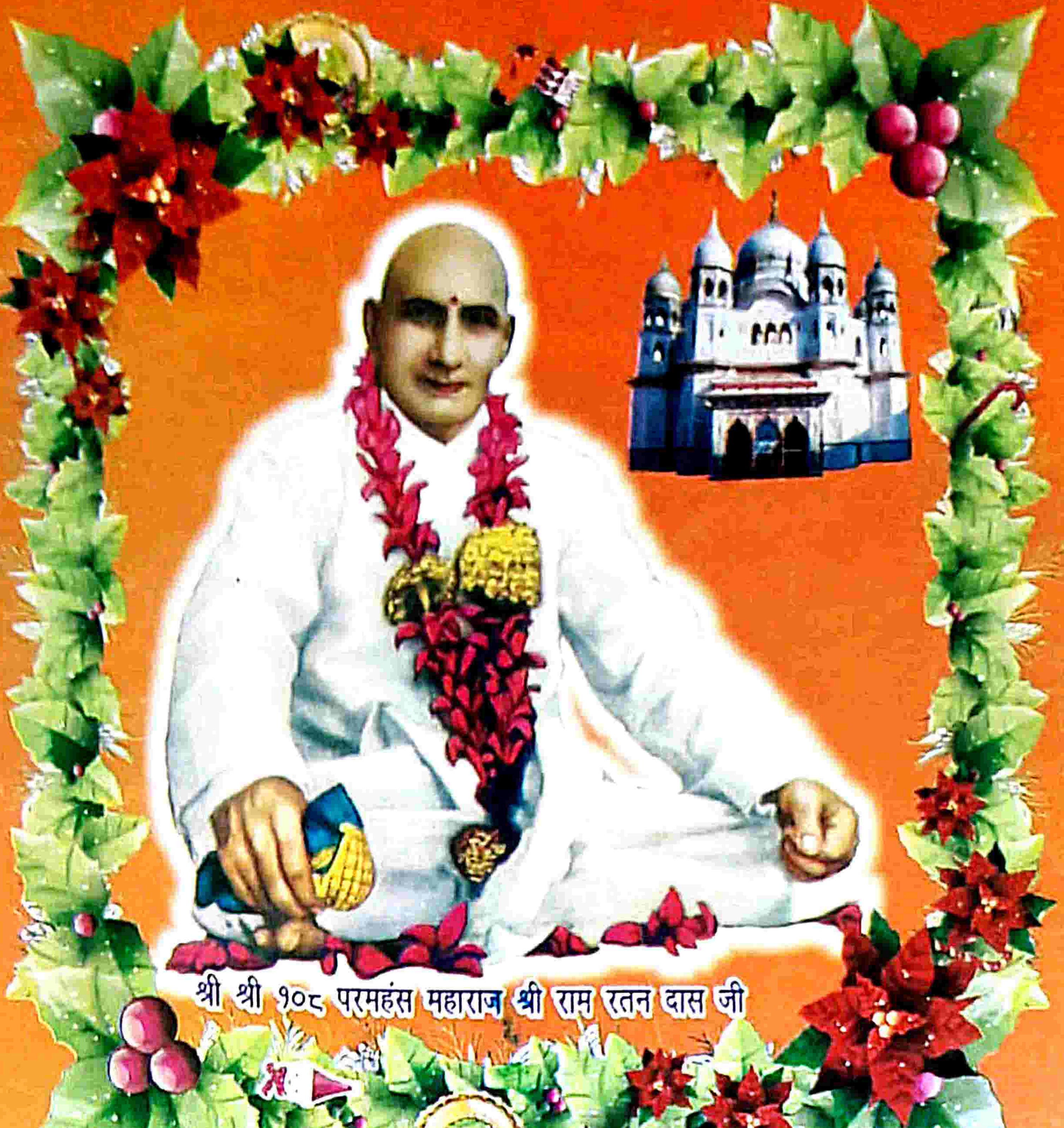

श्री श्री १०८ परमहंस महाराज श्री राम रतन दास जी

प्रकाशक

विद्यार्थी भगत निजानन्दी

॥ श्री राज श्यामा जी सदा सहाय ॥

भजन माला

वन्दौ सतगुरू चरण को, करू सो प्रेम प्रणाम ।
अशुभ हरण मंगलकरण, धनी श्री देवचन्द्र जी नाम ॥
श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री महराज सुनाम ।
तेजकुवरी श्यामा युगल, पल-पल करू प्रणाम ॥

प्रकाशक
विद्यार्थी भगत निजानन्दी

Shri Prannath Ji Pustkalay

द्वितीय संस्करण

२००० प्रति

१ जनवरी २०१६

मुद्रक

श्री जी प्रिन्टिंग प्रेस, रतनपुरी

मुजफ्फरनगर

मो० 8171778492

प्राप्ति स्थान

श्री कृष्ण प्रणामी मन्दिर, सैनी नगर, खतौली

मो० 8273290754

न्यौछावर - २० रुपये

Shri Prannath Ji Pustkalay

प्रस्तावना

प्यारे सुन्दरसाथ जी,

श्री निजानन्द सम्प्रदाय की यह विशेषता रही है कि सुन्दरसाथ की सेवा में उनकी भावनाओं को ध्यान में रखकर कभी सेवा पूजा तो कभी भजन माला व अन्य ग्रंथो का प्रकाशन समय–समय पर होता रहा है और उन्हें हमारे समाज में ही नही, अपितु अन्य समाज में भी श्रद्धा व भावना की दृष्टि से पढ़ा व समझा जाता है। मैंने भी एक छोटा सा प्रयास किया है कि सुन्दरसाथ की सेवा में एक भजन माला का प्रकाशन कर सकूं।

अतः इस प्रकाशन की सेवा को करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि आपको यह भजन माला का गोटा अवश्य ही पसन्द आयेगा।

इन्हीं भावनाओं के साथ...

आपकी चरणरज

विद्यार्थी भगत निजानन्दी

रतनपुरी (मु० नगर)

उत्तर–प्रदेश

Shri Prannath Ji Pustkalay

वन्दना-१

तर्ज- वन्दना मैं कर रही श्री राज की,
सच्चिदानन्दम प्राणों के आधार की।

१. क्षर अक्षर से न्यारा वो निजधाम है, धाम है-२
अक्षर को भी सुध नहीं उस धाम की
वन्दना मैं .... ॥

२. खेल झूठा देखने को आई हैं, आई हैं-२
आके भूली बातें जो थी धाम की
वन्दना मैं .... ॥

३. आये पियाजी हमें जगाने धाम से, धाम से-२
नींद में थी उनकी न पहचान की
वन्दना मैं .... ॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

वन्दना-२

तर्ज- चाहे पास हो चाहे दूर हो..........।
श्यामा-श्याम हो, धनी-धाम हो,
तेरे चरणों में मेरा प्रणाम हो-२

१. रंग-मोहोल में रहन हमारी,
युगल स्वरूप की, छबि जहाँ प्यारी-२
श्यामा .... ॥

२. मूल-मिलावा खिलवत खाना,
परआतम का, असल ठिकाना-२
श्यामा .... ॥

३. प्रीत पिया की अति सुखदाई,
पर निसबत बिन किसी ने ना पाई-२
श्यामा .... ॥

४. सतगुरू बन पिया आप पधारे,
तारतम के किए उजियार-२
श्यामा .... ॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-३

तर्ज-रुख से जरा नकाब हटा दो मेरे हजूर ....।

दिल से हमारे ख्वाब, हटा दो मेरे हजूर।
जलवा वो नूरी हमको, दिखा दो मेरे हजूर॥

१. करते थे साथ आपके, जमुना जी झीलना।
संग स्यामा जी के आपका, हंसना वो बोलना॥
वो ही नज़ारा अपना दिखा दो, मेरे हजूर।
जलवा वो नूरी ....॥

२. कभी कुंजबन में दौड़ना, मधुबन में खेलना।
कभी ताड़बन में आपके, संग साथ झूलना॥
सुख अपने साथ को वो दिखा दो, मेरे हजूर।
जलवा वो नूरी ....॥

३. पिया साथ आपके जहां, आनन्द में झूमना।
इश्के सुराही में तेरी, रुहों का डूबना॥
मस्ती निगाहें जाम पिला दो, मेरे हजूर।
जलवा वो नूरी ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-४

तर्ज- तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम ही मेरी पूजा ....।

तुम ही मेरे प्रीतम, तुम ही मेरे साहेब।
तुम ही प्राणनाथ हो, तुम ही प्राणनाथ हो।।
आतम मेरी हर पल चाहे।
तुम्हारा ही साथ हो, हर पल का साथ हो।।

१. साथ तुम्हारा पिया अब नाहीं छूटे,
चाहे जमाना सारा ही रूठे।
तेरे ही चरणों का अब आसरा हो,
तुह ही मेरे हो, चाहे जहाँ हो।
तुम ही मेरे प्रीतम ....।।

२. तुम से बिछुड़ के पिया कब तक रहना,
मिलना बिछुड़ना अब नहीं सहना।
मिलना वही जो मिल के ना बिछुड़े,
हर पल का साथ हो, तुम्हारा ही साथ हो।
तुम ही मेरे प्रीतम ....।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

है फिर भी क्यों पर्दा ये बतलाइयेगा,
नजर आईयेगा, नजर आइयेगा।
धनी..॥

२. लाखों मुसीबत भी आए तो क्या है,
धनी भी तो संग अपने आए यहां हैं।
ईमान से अपने न गिर जाइयेगा,
यकीन लाइयेगा, यकीन लाइयेगा।
धनी..॥

३. है साहेब की साहेबी समझनी भी मुश्किल
उन्हों ने बनाया हमें अपने काबिल
हकीकत से न तुम बहक जाइयेगा
संभल जाइयेगा, संभल जाइयेगा
धनी..॥

गज़ल–७

तर्ज– कुछ तो बता, हमको इस ख्वाब में लाने वाले,
कब वो दिन आयेंगे–२, फिर लौट के जाने वाले।

Shri Prannath Ji Pustkalay

१. इन निगाहों ने मुझे-२, कत्ल सरेआम किया,
फिर भी तो जिन्दा हैं-२, ये आपके चाहने वाले।
कुछ बता ....॥

२. किसको ये राज़ कहूं-२, कौन है हमदर्द मेरा,
इक सिवा तेरे हैं-२, सब दिल को दुखाने वाले
कुछ बता ....॥

३. हमको लाना ही तो था, इश्क बहाना था तेरा,
क्यूं गुनाह हमको दिया-२, ये खेल दिखाने वाले
कुछ बता ....॥

ग़ज़ल-८

तर्ज- ला पिला दे साकिया, पैमाना पैमाने के बाद।
होश की बातें करूँगी, होश में आने के बाद॥

१. कूदते थे अर्श में तेरे, इश्क के बल पर हम।
न रहा वो इश्क तेरा, अर्श से आने के बाद॥

२. न रहा वो तन हमारा, न अकल न होश है।
इश्क लायें अब कहां से, तुझसे बिछड़ जाने के बाद॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

३. इम्तहां लेते हो क्यों, हम तो इस काबिल नहीं।
हार अपनी मानी हमने, खेल में आने के बाद॥

४. निसबत जानी बाजू पकड़ा, गुरेज़ क्यों फिर इश्क से।
क्या पिलाओगे जाम अपना, दम निकल जाने के बाद॥

ग़ज़ल-९

तर्ज- जाम पर तूं जाम मुझको, ला पिला दे साकिया।
होश क्या एहसास क्या, दुनिया भुला दे साकिया॥

१. मुस्कुराती चीज ये, मुझको पिला तू इस तरह।
जो तहलका सा मेरे दिल में, मचा दे साकिया॥

२. जिन्दगी की गर्दिशों ने, कर दिया मायूस दिल।
राह मुझ को बेखुदी की, तू दिखा दे साकिया॥

३. जाम का रिश्ता है साकी, मयकशी के होंठ से।
दूरियां नजदीक आकर के, मिटा दे साकिया॥

४. घोल दे मस्ती भरी नजरों को, अपने ज़ाम में।
नूर को तू नूर में, अब तो मिला दे साकिया॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-१०

तर्ज- रंगीला हो रंगीला, रंगीला हो रंगीला।
रंगीला रे रंग मने एवो लगावो।
भुलेली आतमा ने आवी जगावो ॥

१. निजधाम मां सुखो थी धराई गयां रे,
दुखों जोवामां ललचाइ गयां रे।
एवो ल्हावो, मैं गुमाव्यो-करूं पस्तावो ॥
भुलेली ....॥

२. अमे परदेशमां रे अही आवी गयां रे,
मोह माया ना पुरमां तणाइ रहया रे।
व्हारे आवो, वहेला आवो, आवो बचावो ॥
भुलेली ....॥

३. मारा धामना धनी जी, तमे मेहर करो रे।
मारी डूबती नैया ने, तमे पार करो रे।
दया लावो, दोड़ी आवो, न रे सतावो ॥
भुलेली ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

४. मारा रंगीला रूपाडा, राज वहेला आवो रे।
सखी वल्लभ नी, सखियों ने लेवा आवो रे॥
सामा आवो तेडी जाओ त्यारे बोलावो।
भुलेली ....॥

भजन–११

तर्ज– जिन्दगी प्यार का गीत है ....

पन्ना रूहों का निजधाम है, वहां रूहों को जाना पड़ेगा।
वहां जा कर सब रूहों को, देखो सजदा बजाना पड़ेगा

१. माया बलवान है भी तो क्या, रोड़े अटकाए तो भी है क्या।
माया फुसलाए तो भी है क्या, वहां रूहों को जाना पड़ेगा

२. बिछुड़ी रूहों का मेला भी है, मिल के प्रेम उमड़ता भी है
वहां मेहेरों के सागर भी हैं, वहां रूहों को जाना पड़ेगा

३. सारी शोभा परमधाम की, उतर आई है देखो वहीं
तलब जिसको है दीदार की, पिया दिल में बसाना पड़ेगा

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-१२

तर्ज- मेरे दो अनमोल रत्न..............।
मेरे दो अनमोल रत्न
रामरतन और जागनी रतन

१. रामरतन जी ने मरज़ीया होकर,
गहरे सागर में गोता लगाया।
सीप और कंकर निरख परख के,
उनमें से इक मोती पाया।।
शफकत बरकत से बना है रतन,
रामरतन और जागनी रतन।
मेरे दो .... ॥

२. रामरतन जी ने प्यार सिखा कर,
ऊंच नीच का भेद मिटाया।
जागनी रतन जी ने सेवा करके,
तन मन धन सब धनी पे लुटाया।।
साथ की सेवा में हुए हैं मग्न,
रामरतन और जागनी रतन।
मेरे दो .... ॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

३. हादी के कदमों पर चल कर,
जागनी रतन जी ने चल के दिखाया।
गांव गांव और नगर नगर में,
जागनी का अभियान चलाया।।
बिछुड़ी रूहों का किया है मिलन,
रामरतन और जागनी रतन।
मेरे दो .... ।।

४. काम धनी का धनी ही कराते,
चर्चा सुना कर धनी ही जगाते।
देते हैं शोभा रूहों के तन को,
मूल वतन अपना दिखाते।।
अन्दर आए के बैठे हैं खसम,
रामरतन और जागनी रतन।
मेरे दो .... ।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-१३

तर्ज- मेरे मोहन तेरा मुस्कुराना ....।

मेरे दिलवर तेरा मुस्कुराना,
भूल जाने के काबिल नहीं है।
देते हैं लाड से कैसे दिलवर,
वो बताने के काबिल नहीं है॥

१. जब से देखा है जलवा तुम्हारा,
कोई आंखों में जंचता नहीं है।
यूं तो देखे बहुत नूर वाले,
सारे आलम में तुझ सा नहीं है।
मेरे दिलवर ....॥

२. तेरी तिरछी नजर के मैं सदके,
तेरी आंखे हैं या मय के प्याले।
जिसको नजरों से तूने पिलाई,
होश आने के काबिल नहीं है।
मेरे दिलवर ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

३. सैकड़ों बार देखा है उनको,
प्यास नजरों की बुझती नहीं है।
ऐसा महसूस होता है हमको,
जैसे सदियों से देखा नहीं है।
मेरे दिलवर ....॥

भजन-१४

तर्ज- हमें तो लूट लिया ....

परख लो वाणी से, मोमिन हैं या मुनाफिक हैं
डूबे हैं माया में, या धनी के आशिक हैं ॥

१. मोमिन का दावा लिया, काफिरों और मुनाफिकों ने।
कसौटी दिखलाती है, कस परखा है सराफों ने॥
अर्स के मोमिन ही, धनी के मुआफ़क हैं।
डूबे हैं माया ....॥

२. नाम कुर्बानी का सुन, उलसत हैं मोमिनों के अंग।
किया मुरदार दुनी को, चढ़ा है अर्श का रंग॥
अपने धनी पे फिदा हैं, जो उनके आशिक हैं।
डूबे हैं माया ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

३. हद के जीवड़े क्या समझेंगे, बेहद की बातें।
सूरज निकला है, अंधों के लिए काली रातें॥
रूह की नजर से, माशूक नजर आते हैं।
डूबे हैं माया ....॥

भजन-१५

तर्ज- ऐ मेरे प्यारे वतन, ए मेरे बिछुड़े चमन...............।
अर्ज करती है दुल्हन, पकड़ कर धनी के चरण।
सुन लो मेहरबान
खुद को भूली है जो रूह, उसका है बस तूं ही तूं॥
तुझ पे रूह कुरबान

१. मेहर के सागर धनी, मैं लहर हूं आपकी।
इश्क देखा आपका, जानी साहेबी आपकी॥
अब तो है बस ये लगन, देखूं अपना मूल तन।
है बका में जहां, खुद को भूली ....॥

२. सारे अंगों से धनी, आपकी सेवा करूं।
आप दुल्हा मैं दुल्हन, वचन दृढ़ करके कहूं॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

रबद को करके दफ़न, तोड़ दो झूठा सुपन।
अंग लगे अंगना, खुद को भूली......................॥

३. कुछ तेरी अर्जी करें, कुछ फ़ना में ग़र्क हैं।
कुछ का मन चलने को है, कुछ के मन में तर्क है॥
खेल कैसे हो खत्म, सोच कर आंखे हैं नम।
साथ है हैरान, खुद को भूली........................ ॥

भजन-१६

तर्ज- हजार बातें कहे जमाना मेरी वफा पे ....।
हजार बातें कहे जमाना, मगर धनी पे यकीं रखना
हर इक अदा हक ने जो दिखाई,
उसी अदा पे यकीन रखना

१. यह लाड लज्जत की जिन्दगी भी,
हमें मिली है जो बेबसी में -२
यही रज़ा है मेरे धनी की,
उसी रज़ा पे यकीं रखना
हजार बातें ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

२. हुकम से अपना क्या वास्ता है,
बसाया हाकिम जब अपने दिल में-२
हुकम ही हाकिम का बेखता है,
रब की सदा पे यकीं रखना
हजार बातें ....॥

३. जो इश्क अपना छुपाते हैं वो,
छुपा छुपा के रखा करें वो-२
बका फनां में हमीं ने लेना,
है इश्क हक से यकीं रखना
हजार बातें ....॥

भजन-१७

तर्ज- बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम...........।
इश्क के सागर है मेरे खसम
करते पिया तुम-२, करम पे करम

१. पिया तुम हो सागर, लहरें हम तुम्हारी
न जाये सही अब ये दूरी तुम्हारी

Shri Prannath Ji Pustkalay

कर दो पिया तुम-२, खेल ये खत्म
इश्क के सागर ....॥

२. अगर आप चाहो तो, पल में जगा लो
नजर ये हमारी जहां से हटा लो
ना लो अब हुकम का-२, बहाना खसम
इश्क के सागर ....॥

३. कैसी हुई पिया हालत हमारी
बढ़ती ही जाये ये बेकरारी
रहेगी ये जब तक-२, मिलेंगे न हम
इश्क के सागर ....॥

४. चाहत हमारी है इश्क तुम्हारा
ना जिसके बिना अब जीना गवारा
तुम्हें यूं ही चाहेंगे-२, जब तक है दम
इश्क के सागर ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-१८

तर्ज- आ जा रे परदेसी, मैं तो कब से खड़ी उस पार....।

हम है परदेसी, अपना वतन है अक्षर पार
देखने आई हैं संसार

१. पूरन ब्रह्म है प्रेम की राशि
भेद है गहरा बात जरा सी
समझें रूहें खासल-खासी
अपना ....॥

२. झूठी जिमी में लगाये डेरे
लेने आए साहेब मेरे
सेहेरग से नजदीक है तेरे
अपना ....॥

३. लाख चौरासी का दुख झेला
नर तन को फिर नरक में ठेला
पार करे भव प्रेम का मेला
अपना ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

४. सत ही राह न हमने जानी
मोह माया में की मनमानी
रहनी में न आयी वानी
अपना ....॥

५. याद करो निजधाम की लीला
नैनों का वो इश्क नशीला
राज के रंग में साथ रंगीला
अपना ....॥

भजन-१९

तर्ज- चौदहवीं का चांद हो....................।

सूरत कमाल है या बेमिसाल है
मेहर बिना बयान करें क्या मज़ाल है

१. शोभित है पाग शीश, कमल पर हजूर के।
चमके जिमी पलक, इस मुखड़े के नूर से॥
सुन-सुन के मीठी रसना रूह, होती निहाल है।
सूरत ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

२. नैनों से उनके इश्क के, सागर उमड़ रहे।
मुस्कान देखे अधरों की, मोमिन उलझ रहे॥
बाँकी है जिनकी चितवन, वो नूरे जमाल है।
सूरत ....॥

३. कानन तलक हैं केश क्या, खुशबू लिए हुए।
मस्तक तिलक सुहामणा, शोभा किए हुए॥
नूरी छबि जो देखे कभी, हो बेहाल है।
सूरत ....॥

भजन-२०

तर्ज- बाबुल का ये घर बहना ....।
इश्क मेरे प्रीतम का, अनमोल खज़ाना है।
जिसको ये दौलत मिली, हुआ जग से बेगाना है।

१. प्यासे अरमान लिए, आए तेरी महफिल में।
पीने वालों की मंजिल, ये नज़र मयख़ाना है॥
इश्क मेरे प्रीतम ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

२. इश्के दौर चलता रहे, वक्त यूं ही कटता रहे।
इन हसीं लम्हों में, खुद को भूल जाना है॥
इश्क मेरे प्रीतम ....॥

३. लब पर हो खामोशियां, और हो तड़प दिल में।
अश्कों में ना बह निकले, प्यार दिल में छुपाना है॥
इश्क मेरे प्रीतम ....॥

४. आप हबीब हुए, अपने बीमारों के।
इश्के-गम के मारों का, तेरा दर शफ़ाखाना है॥
इश्क मेरे प्रीतम ....॥

५. हर सहर से पहले शबे-गम आती है।
दर्द बयां कर डाला, बन जाता फंसाना है॥
इश्क मेरे प्रीतम ....॥

भजन-२१

तर्ज- मुझे प्यार की जिन्दगी.........................।

मुझे प्यार का आसरा देने वाले,
रुहों के मालिक निजधाम वाले

Shri Prannath Ji Pustkalay

१. संसार सागर में सूझे न मंजिल
मौजों से बच कर रहना है मुश्किल
किश्ती रुहो की तेरे हवाले
मुझे प्यार का ....॥

२. रंग–महौल में जो रहने वाली
सात घाट में खेलन वाली
उसको तेरे बिन कौन संभाले
मुझे प्यार का ....॥

३. आतम देखे खेल फ़ना में
परआतम का ठौर बका में
दोनों तनों के तुम रखवाले
मुझे प्यार का ....॥

४. हक रुहों में और रुहें हक में
अरस परस का नाता अर्स में
नैनों से अमीरस छलकाने वाले
मुझे प्यार का ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-२२

तर्ज- कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है........।

तेरे दीदार को पाऊँ, यही मन चाहता है
कि इक पल दूर न जाऊँ, यही मन चाहता है

१. तेरे चरणों की महिमा को, पिया मैं गाऊँ कैसे
लांक तली लाल एड़ियाँ, पिया मैं पाऊँ कैसे
तेरे चरणों में रह जाऊँ, यही मन चाहता है
कि इक पल ....॥

२. तेरे सुन्दर गले में पाँच हारों की लड़ी है
कोई हीरा, कोई मानक, कोई नीलवी जड़ी है
तेरे सिनगार को पाऊँ, यही मन चाहता है
कि इक पल ....॥

३. तेरे बाजू में पोहोंची और काड़ो-कड़ी है
दस अंगुरी में दस अंगूठियाँ रतनों जड़ी हैं
नखों के नूर को पाऊँ, यही मन चाहता है
कि इक पल ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

४. आप के नूरी मुख के नूर से ये धाम चमके
लाल अधरों की शोभा देख के ये आशिक अटके
झलक इक नूर की पाऊँ यही मन चाहता है
कि इक पल ....॥

५. इश्क का जाम पिला देना, यही तमन्ना है
तेरे आगे खड़ी विनती करे, ये अंगना है
तेरी मस्ती में खो जाऊँ यही मन चाहता है
कि इक पल ....॥

भजन-२३

तर्ज- साजन मेरा उस पार है ....।

धनी हमारे प्राणनाथ हैं,
हम सब उन्हीं के सुन्दर साथ हैं

१. श्री देवचन्द्र जी के तन में,
सुन्दर बाई की आतम में
श्यामा जी ने किया वास है
हम सब ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

२. श्री मेहराज जी के तन में,
श्री इन्द्रावती की आतम में,
पाँचों स्वरूप साक्षात् है
हम सब ....॥

३. युगल स्वरूप आप विराजे हैं,
अंग संग सुन्दर साथ साजे हैं
उम्मत ये ही खासल खास है
हम सब ....॥

४. वेद कतेबो में प्रमाण है,
क्षर अक्षर आगे परमधाम है
रस्ता दिखाये निजनाम है
हम सब ....॥

५. सबका मिटाया ये भरम है,
सोई खुदा सोई ब्रह्म है
मुक्त किया संसार है
हम सब ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

भजन-२४

तर्ज- अब सौंप दिया इस जीवन का ....।

श्री प्राणनाथ पूर्ण ब्रह्म ने, सब धर्मों का झगड़ा मिटाया है
है सोई खुदा, सोई पूर्ण ब्रह्म, ये अनोखा ज्ञान सुनाया है

१. ये दुनियाँ आदि अनादि से थी, आवागमन के चक्कर में
ब्रह्म ज्ञान की अखंडवाणी से, त्रैगुण का फंद छुड़ाया है
श्री प्राणनाथ ....॥

२. सब कहते हैं इक पूर्ण ब्रह्म, पर है वो कौन मिटा ना भरम
अपनी पहचान बता करके, निजघर का रास्ता बताया है
श्री प्राणनाथ ....॥

३. श्री विजयाभिनन्दन प्राणनाथ, नर तन में पधार हैं साक्षात्
धन कलयुग और धन भरतखंड, जहाँ आपने फेरा लगाया है
श्री प्राणनाथ ....॥

४. हम सुन्दरसाथ हैं अंग उनके, भूले हैं माया का संग करके
हम परमधाम से आये हैं, हम सबको ये समझाया है
श्री प्राणनाथ ....॥

Shri Prannath Ji Pustkalay

निज श्री कृष्ण परमात्मने नमः

भूमिका

निजात्मन सुन्दर साथ जी भगवत प्रेमी भक्तजन प्रणाम जी अनादि अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के नाम, रूप, लीला और धाम का ज्ञान कराने वाली प्रस्तुत पुष्पांजलि परमतत्व खोजी आत्माओं के लिए परम उपयोगी है। भूली भटकी आत्माओं के लिए परमधाम का मार्ग प्रशस्त कराने में यह पूर्ण रूपेण सक्षम है। सन्त श्री राज सेवक जी महाराज का जन्म दि० 2 फ़रवरी सन् 1940 ई० के क्षत्रिय सूर्यवंश के शाक्य कुल में पिता श्री मूलचन्द्र माता श्री महारानी की पावनकोख से हुआ।

आप बचपन से परमात्मा की खोज करते हुए परमहंस स्वामी पं० श्री मोतीदास जी महाराज से निजनाम तारतम्य को लेकर परा प्रेम लक्षणा भक्ति को साकार करते हुए परमात्मा श्री राज जी के चरणों काव्य सुमन अर्पित करते है। अनन्य श्रद्धा पूर्वक पतिव्रत भाव में भक्ति अपनायी हैं। अतैव प्रस्तुत पुस्तिका का नाम राज पुष्पांजलि समीचीन एवं सार्थक है।

प्रस्तुत पुष्पांजलि में गीतों की अनेक विद्याओं का रेखांकन हुआ है। फलतः प्रस्तुत कृति समूचे हिन्दी साहित्य इतिहास में सदा स्मणीय रखी जायेगी। मेरा विश्वास है कि निःसंदेह श्री कृष्ण प्रणामी निजानन्द सम्प्रदाय की एक सशक्त कृति है।

सन्त श्री 108 नन्द किशोर जी महाराज

Shri Prannath Ji Pustkalay

मंगलाचरण-२

श्री सद्गुरू के चरणों को, वन्दौं दोऊ कर जोर।
श्री राज श्यामा सहित ,हृदय विराजो मोर ।।
सदा महामति दाहिने,सनमुख सुन्दरसाथ।
नाम लेत छात्रसाल को,सिद्ध होंय सब काज।।

पद -१ गुरूवन्दना (राग ध्रुपद)

श्री गुरू चरण कमल चित लाऊँ।।
पद रज लेकर गुरू अपने की ,अपने शीश चढ़ाऊँ।।।
विनती करूँ दोऊ कर दीजे,राज पिया गुण गाऊँ।।
दिव्य दृष्टि गुरू ऐसीं दीजे,राज पिया गुण गाऊँ।।।
पर आत्म मेरी राजचरण, में, तामे सुरत जगाऊँ।।
सेवक युगुल चरण कमलन पर,बार बार बलि जाऊँ।।।।

पद-२ सद्गुरू वन्दना (राग भैरवी)

सद्गुरू चरण कमल बलिहारी।।
डूब रही थी भवसागर में, कर गहि पार उतारी।।।
मोह नींद में मैं थी सोई, लागी विषय ब्यारी।।
दे निजनाम जगाई मोको, किन्हीं दूर खुमारी ।।।
क्षर अक्षर के पार लखायो, परमधाम सुखकारी।।
पक्ष पच्चीस परमधाम है राजे, यमुना बहित मझारी।।।
दस मन्जिल को महिल बनो है, तामे पहिल अटारी।।
प्रथम भूमिका मूल मिलावा,चौसठ खम्भ निहारी।।।
मध्य सिंहासन पिया विराजे,बायें श्यामा प्यारी।।
सेवक छवि लख धाम धनी की, चरण कमल पर वारी।।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

पद-३ श्री सद्गुरू वन्दना

ध्याइये श्री महामति जग वन्दन, श्री निष्कलंक विजया अभिनन्दन।।
सच्चिदानन्द पूरण ब्रह्म प्यारे। धामधनी श्री राज हमारे।।
आन बने यशुदा के नन्दन। ध्याइये श्री महामति जग बन्दन।।१।।
ब्रज में प्रथम आप धनी आये, ब्रज वासिन सब आनन्द पाये।।
गोपिन संग फिर रहस रचाये, भई सभी गोपी तब धन धन।।२।।
ध्याइये श्री महामति जग वन्दन।
इच्छा रही गोपिन के मन में, प्रगटीं आय देश देशन में।।
श्यामा आई देवचन्द्र तन में,दरश तारतम्य दियो आनन्द घन।।३।।
ध्याइये श्री महामति जग वन्दन।।
शम्बल नौतन प्रगटे आई,उत्तम कुल केशव पितु पाई।
हर्षित गोद लिये धन बाई,पूरण ब्रह्म आये बालक बन।।४।।
ध्याइये श्री महामति जगवन्दन।
विधि हरि हर जाको पार न पाये, ब्रह्मसृष्टि हितु सो भू आये।
सेवक आन मिले जीवन धन,ध्याइये श्री महामति जग वन्दन।।५।।

पद-४ श्री सद्गुरू वन्दना

दोहा :-श्री गुरू पद नख शीषधर ,बन्दौं बारम्बार।
आय फंस भव सिन्धु में,लीजै नाथ उवार।।
गुरूदेव शरण तेरी, मुझको न भूला देना।
मैं दास हूँ चरणों का, चरणों में जगह देना।।
मेरे जीवन की नैइया, भव धार में डूब रही।
गुरू हाथ में ले वल्ली, उस पार लगा देना।।
मद मोह व मत्सर ने है, हमको फांस लिया।
गुरूदेव दया करके, हमें इनसे छुड़ा देना।।
श्रीराज के चरणों में, पर आत्म जग जाये।
'सेवक' की ए विनती, इसको न भुला देना।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्रीराज वन्दना–५

राज पिया मैं शरण तुम्हारी।
क्षमा करो प्रभु भूल हमारी, तुम जीते मैं हारी।।
अक्षर खेल को हमने मांगा, ये थी भूल हमारी।
खेल में आकर खेल बनी मै, भूली याद तुम्हारी।।
सदियां बीती निकल न पाई, सहे दुसह दुःख भारी।
'सेवक' को प्रभु आय उवारो,आया शरण तुम्हारी।।

श्रीकृष्ण वन्दना–६

श्याम जी तुमको मेरी लाज।
सब तज आयो शरण आपकी, तुम हो गरीब निवाज।।
जन्म जन्म मैं भटकत हारो, जग विषयन के काज।
सबको छोड़ शरण तेरी आयो,हे मोहन ब्रज राज।।
बिरद उवारन नाम आपको, राखो मेरी लाज।
'सेवक' के दुःख दूर करो प्रभु, देकर चरण जहाज।।

श्रीगुरू वन्दना–७

गुरूदेव दया करके मेरी, बिगड़ी बना देना।
मझधार में नैइया है, उस पार लगा देना।।
दुनिया का सताया हूँ, तेरी शरण में आया हूँ।
'सेवक'मैं तुम्हारा हूँ, मुझको न भुला देना।।
है सदियाँ बीत गई, निज घर से आये हुये।
मैं भूली यहां आकर, निजघर को दिखा देना।।
श्रीराज के चरणों में, पर आतम मेरी है।
पर आतम में सद्गुरू, मेरी आतम जगा देना।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्रीकृष्ण वन्दना-८

श्याम आये शरण हम तुम्हारी, दास हमको बनाना पड़ेगा।
डूब जाए न जीवद की नइया,पार इसको लगाना पड़ेगा।।
जिनको अपना था हम मान बैठे, धोखा उनने ही हमको दिया है।
छोड़ उनका दिया साथ हमने, मुझे अपना बनाना पड़ेगा।।
जो भी आये शरण में तुम्हारी, उनको तुमने सहारा दिया है।
है दया सिन्धु सब तुमको कहिते, अब दया भाव लाना पड़गा।।
जिसने तुम्को पुकारा है मोहन, उसकी बिगड़ी बनाई है तुमने।
छोड़ सेवक दिया साथ सबने,शरण अपने बिठाना पड़ेगा।।

श्रीराज शरण-९

प्रभु जी आया तेरे द्वारा।
जीवन नैइया पार करो अब, डूब रही मझधार।।
विषयन के संग निशदिन भटको,समझ इन्हें मैं सार।
अन्त समय कोई काम न आयो, भई जिन्दगी ख्वार।।
अशरण शरण नाथ मैं तेरी, कर दो भव से पार।
सेवक आया द्वारा तुम्हारे, कर दो प्रभू उद्धार।

श्री सदगुरू वन्दना-१०

गुरू तेरे चरणों का, बस एक सहारा हैं ।
है सबको देखा लिया,कोई न हमारा हैं।।
अपना अपना कहिकर, सबने हमको लूटा।
ए स्वार्थ भरी दुनियां,सपने का नजारा है।।
अब जायें तो जाएं कहाँ,है कोई नहीं अपना।
गुरूदेव मैंने पकड़ा अब, दामन तुम्हारा है।।
आया हूँ शरण तेरी,चरणों में जगह देना।
एक बार प्रभू कहि दो, सेवक तू हमारा है।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्री राज वन्दना-११

सुन लो विनती मेरी हाथ जोड़ खड़ी।
आज मुझ पर धनी भारी विपदा पड़ी ।।
भूल हमसे हुई मांग हमने लिया।
खेल अक्षर दिखा दो हमारे पिया।।
फंस गई खेल अक्षर में [illegible] आ पड़ी।
आज भारी धनी मुझ पर विपदा पड़ी।।
बीत सदियां गई न निकल पा रही।
तेरी आत्म धनी आज दुख पा रही।।
क्षमा कर दो मुझे तेरे दर पर खड़ी ।
आज मुझ पर धनी भारी विपदा पड़ी।।
फिर से आनन्द में पाऊँ परम धाम का।
मुझे दर्शन करा दो जुगुल जोड़ी का।।
'सेवक' कब ए मिलेगी वो आनंद घड़ी।
आज मुझ पर धनी भारी विपदा पड़ी।।

श्री राज गुण-१२

जो सुख होत राज गुण गाये।
सो सुख तोको अन्त मिले नहीं, क्यों जग में भरभाये।।
परमधाम की अनुपम शोभा, पक्ष पच्चीस सुहाये।
निष्कलंक विजया अभिनन्दन आकर भेद बताये।।
दस मन्जिल को महिल बनो है, प्राणनाथ समझाये।
प्रथम भूमिका मूल मिलावा, चौसट खंभ सुहाये।।
मध्य सिंहासन पिया विराजे, श्यामा साथ सुहाये।
'सेवक' जागे पर आत्म में , प्राणनाथ पति पाये।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्री राज नाम-१३

रे मन राज नाम कहि लीजै।
राज नाम है प्रेम रसीला, याको निशदिन पीजै।।
सतगुर से निजनाम को लेकर, ताको सुरमन किजै।
सर दुर्लभ तन तूने पायो, जन्म सुफल कर लीजै।
परमधाम की तुम हो आत्मा,पर आत्म चित दीजै।।
पर आतम में जाग्रित होकर, प्रभु के दर्शन कीजै।
सेवक बिनु अब धाम धनी के ,विरथा काहे जीजै।।
परमधाम में पिया सखिन संघ, निश दिन आनंद लीजै।

श्री राज चरण-१४

जो तूं राज चरण चित धरतो।
मान जो लेतो बात धनी की, चौरासी नहीं परतो।।
प्रेम परीक्षा देन प्रभू को,तूं जिद नाहीं करतो।
भव सागर की अगम धार में,आकर नाहीं परतो।।
तो जग में न कष्ट भोगता, भटक भटक क्यों मरतो।
जाग्रति ज्ञान धनी ले आये,लेकर उसे सुमरतो।।
परम धाम पच्चीस पक्ष में,प्रीतम सहित विचरतो।

श्री राज वन्दना (गजल) १५

मैं दास हूँ चरणों का किस दर पर जाऊँ मैं।
जो मुझे पै गुजरती है अब किसको सुनाऊँ मैं।।
जब से तुमसे विछुड़े आराम नहीं पाया।
क्या क्या मुझ पर गुजरी अब कैसे बताऊँ मैं।।
अपना अपना कहिकर सबने हमको लूटा।
है सबने छोड़ दिया किसे अपरा बनाऊँ मैं।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

है विनती सेवक की अब मेहर नजर करदो।।
पर आत्म में जग कर दर्शन को पाऊँ मैं।

वन्दना श्री राज की (गजल)१६

इतनी तो भूल न थी जो हमको भुला दिया।
हमको तुम्हारी याद ने पागल बना दिया।।
मांग था खेल अक्षर हमने जो आप से।
ऐसा दिखाया खेल की तिलसम बना दिया।।
आई थी खेल देखने खुद खेल बन गई।
बैठी हूँ तेरे सामने खुद को भुला दिया।।
सेवक की भूल को अब माफ कीजिये ।
आई जो याद तेरी तो मुझको रूला दिया।

श्याम विरह-१७

मुझे भूल गये सांवरिया।
जब से गये मेरी सुध नहीं लीनी,भूले मेरी खबारिया।।
हे निरमोही दरश दिखाजा तरसे मेरी नजरिया।
विरहा की मारी वन वन डोलूं हो करके वावरिया।।
'सेवक' मैं चरणों की दासी करदों मेहर नजरिया।।

श्री कृष्ण कृपा-१८

करते स्वयं कृष्ण तुम मेरा नाम हो रहा है।
तेरी कृपा से मेरा सब काम हो रहा है।।
मुझमें कहां है शक्ति गुणगान तेरा गाऊँ।
तेरी कृपा से चिन्तन निशयाम हो रहा है।।
सेवक पे तेरी कृपा हर वक्त श्याम रहती ।

Shri Prannath Ji Pustkalay

करता नहीं मैं कुछ भी सब काम हो रहा है।।

श्याम शरण–१९

शरण श्याम तेरी हम आये हुये हैं।
दुनियां के हम प्रभु सताये हुये हैं।।
जिन्हें अपना अब तक समझते रहे हैं।
वही शत्रुता अब बनाये हुये हैं।।
लगा दो किनारे से नैइया हमारी।
मुझे मोह मत्सर फंसाये हुये हैं।।
चरण की शरण छोड़ जाये कहाँ अब।
सेवक शरण तेरी आये हुये हैं।।

राज जी से अरजी–२०

फिर तेरे दरबार में अरजी लगाने आ गया।
जो गुजरती है मुझ पर उसको सुनाने आ गया।।
मैंने माना मैं तेरे दरबार के काबिल नहीं।
पर मैं अपने भूल की बख्शिष कराने आ गया।।
छानकर देखा जमाना है कोई अपना नहीं।
सारी दुनियां छोड़ कर तुमको मनाने आ गया।।
अब न वापिस जायेंगे हम तेरे दरवार से ।
ए तेरा दरवार अब 'सेवक' के मन को भा गया।।

राज श्याम चिन्तन–२१

मन तुम भजलो श्यामा श्यामा।
मूल मिलावा पिया विराजे, बारह सहत्र संग वाम।।
पर आत्म तेरी उनके चरण में,जो तेरा मूल मुकाम।
उनके चरण मे चित को दीजे, निशिदिन आठो याम।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

मानव तन का लाभ यही है,जागो अपने धाम।
सेवक छवि लख धाम धनी की, हों पूरण मन काम।।

श्री राज शरण-२२

अब हम आये शरण तुम्हारी।
भूल परी मैं भव सागर में,देखी सबकी यारी।।
जिनके हित में निशदिन भटको,उनहीं कीनी ख्वारी।
जा तन से जो प्रेम करत थे,उनहीं अग्नि लै जारी।।
तेरे बिना प्रभु और न मेरा, देखी दुनियां सारी।
अपनी जान दया प्रभु कीजे, लीजै मोय उबारी।।
भूल हुई सो छमा करो प्रभु,तुम जीते मैं हारी।
सेवक तेरे चरण कमल पर, बार बार बलि हारी।।

श्री राज पिया की याद में-२३

राज पिया हो मेरी ले लो खबरिया।
जब से बिछुड़ी सुध नहीं लीनी।।
भूले मेरी खबरिया,राज पिया मेरी ले खबरिया।।
मैं परदेशन राह भुलानी, आप बिना हो गई बेगानी।
लुट गई बीच बजरिया, राज पिया मेरी ले लो खबरिया।।
अपना अपना कहि कर लूटा,दिखला करके प्रेम अनूठा।
बहि रही मोह बयरिया,राज पिया मेरी ले लो खबरिया।
लुट गई जीवन की फुलवारी, सेवक आया शरण तुम्हारी।।
कर दो मेहर नजरिया, राज पिया मेरी ले लो खबरिया।

श्री कृष्ण वन्दना-२४

बिगड़ी मेरी बना दो प्यारे कृष्ण कन्हैया।
भव सिन्धु में पड़ी है जीवन की मेरी नइया।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

बहती अगम है धारा, दीखे नहीं किनारा।
दे दो मुझे सहारा, प्यारे कृष्ण कन्हैया।।
अपना जिन्हें बनाया, न काम कोई आया।
अब द्वारा तेरे आया, प्यारे कृष्ण कन्हैया।।
सेवक में शरण तेरी, प्रभु लाज राखो मेरी।
मिट जाए जन्म फेरी, ब्रजराज हे कन्हैया।।

श्री कृष्ण विनय-२५

बिगड़ी मेरी बना दे वो श्याम मुरली वाले ।
आया शरण तुम्हारी श्री कृष्ण मुरली वाले ।।
कोई न तुम बिन मेरा,जिसको विनय सुनाऊँ।
सब छोड़ बैठे हमको घनश्याम मुरली वाले।।
ठुकराया सारे जग का मैं द्वार तेरे आया।
कर मेहर की नजर अब ब्रजराज मुरली वाले।।
मुख से हटा दो परदा सूरत जरा दिखा दो।
'सेवक' मुझे बनालो नंदलाल मुरली वाले।।

श्री राधा कृष्ण कृपा-२६

राधे राधे गाये जा,तूं जीवन सफल बनायेजा।
राधे राधे गाये जा, तूं कृष्ण कृपा को पायेजा।।
कृष्णा कृष्ण गायेजा, तूं राधे कृपा को पायेजा।
राधे कृष्णा गायेजा, तू जीवन सफल बनायेजा।।
भजले तूं राधा राधा, कट जाये भव की बाधा।
राधे के पद ध्यायेजा,जीवन सफल बनायेजा।।
भजले तूं कृष्णा कृष्णा,मिट जाए तेरी तृष्णा।
'सेवक' कृष्ण को ध्योये, जीवन सफल बनायेजा।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

चेतावनी देव दुर्लभ तन-२७

मानव तन है तुझे देव दुर्लभ मिला ।
फंसके विषयों में इसको गंवाता है क्यों।।
छोड़ देंगे तुझे तेरे साथी सभी
जानकर उनमें खुद को फंसाता है क्यों।।
अपना अपना है कहि कर सभी लूटते ।
छोड़ देंगे तुझे प्राण के छूटते।।
फिर जला देंगे अग्नीं में साथी तेरे।
जानकर इन पर जीवन लुटाता है क्यों
मान सेवक का कहिना अभी बख्त है।
लेके निजनाम अपने चलो धाम को।।
मुक्ति तुझको मिलेगी सदा के लिये ।
व्यर्थ मानव जन्म को गंवाता है क्यों।।

चेतावनी जागनी गीत -२८

ए मुसाफिर जागकर गफलत में सोना छोड़ दे।
झूठे जग से मन हटाकर प्रभु चरण में जोड़ दे।।
जिनको अपना मान बैठा साथ वो देंगे नहीं।
क्यों न तु इनसे अभी से प्यार करना छोड़ दे ।।
इस जहां के बीच मे कायम ठिकाना है नहीं।
क्यों भटकता तूं यहां सब जग से नाता तोड़ दे।।
जाग जा निज धाम में तेरी पर आत्म हैं जहां।
मानकर 'सेवक' का कहिना प्रभु चरण चित जोड़ दे।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्री राज की याद-२६

बिना दर्शन धनी तेरे हैं हमनें बहुत दिन खोये।
याद जब आपकी आयी प्रभु तो हम बहुत रोये।।
बहुत बरजी धनी तुमने न हमने एक मानी थी।
खेल अक्षर का देखन को मेरे दिल में समानी थी।।
न मानी आपकी हमने थी अक्षर खेल में खोये।
याद जब आपकी आई प्रभु तो हम बहुत रोये।।
कहा था आपने जाकर हमें तुम भूल जाओगी।
न देखो खेल अक्षर का वहां तुम दुख उठाओगी।।
दुखों पर दुख पड़े हम पर धनी तो हम बहुत रोये।
याद जब आपकी आई प्रभु तो हम बहुत रोये।।
बचालो हम को अब आके नहीं दुख सहिन होते है।
तुम्हारी याद जब आती हमारे नैन रोते हैं।।
गमों के दौर से गुजरे तो 'सेवक' हम बहुत रोये।
यांद जब आपकी की आई धनी तो हम बहुत रोये।।

सतसंग क्या है-३०

प्रभु से मिलने का सतसंग बहाना है।
दुनियां वाले क्या जाने संबंध पुराना है।।
यहां क्यों आई आत्म कहाँ इसका ठिकाना है।
यह छोड़ निज घर को अपने को भूल गई।।
आतम पर आत्म का झगड़ा ए पुराना है।
आतम पर आत्म में जाकर जब मिल जाती है।।
'सेवक' पर दुनियां में होता नहीं आना है।

Shri Prannath Ji Pustkalay

चेतावनी तर्ज-गुजरा हुआ जमाना आता नहीं दुबारा-३१

विषयों में फंस के तूने मानव जन्म गुजारा।
बीता हुआ समय फि आता नहीं दुबारा।।
ए पुत्र पत्नी धन ए अपना जिसे समझता।
स्वार्थ के ए सर्भ हैं कोई नहीं तुम्हारा ।।
दुनियां मुसाफिर खाना इसमें नहीं है रहिना।
तू छोड़ कर धनी को फिरता है मारा मारा।।
अनुमोल मानव तन है सेवक जो तूने पाया।
भज राधे राधे कृष्णा कल्याण हो तुम्हारा।

चेतावनी(गजल)३२

जिसको अपना समझ रहा तूं, यहीं पड़ा रह जायेगा।
जिस तन को तू मल मल धोता ,माटी में मिल जायेगा।।
जब तक तेरी जोर जवानी, तब तक लाखों साथी हैं।।
अन्त समय में वो मन मूरख, कोई काम नहीं आयेगा।
कभी गया न सतसंग में, न प्रभु का गुन गान किया।।
जिस तन पर तूं गर्व करे, वो अग्नी में जल जायेगा।
इससे मान कहीं तूं 'सेवक' गुरू सेजानिज नाम को ले।।
जो निजनाम करे तूं सुमरन, परधाम को पायेगा।

श्याम इतनी कृपा कीजिये तर्ज-लज्जते गम बढ़ा दीजिये।३३

श्याम इतनी कृपा कीजिये, मुझे अपना बना लीजिये।
दुनियां ने मुझे है सताया , छोड़ तेरी शरण में मैं आया।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

चरणों मे जगह दीजिये, मुझे अपना बना लीजिये।
जिनको अपना समझता रहा मैं, धोखा उनने ही हमको दिया।।
है गमों से भरी मेरी दुनियां, अब गमों को मिटा दीजिये।
है 'सेवक' शरण तेरी आया, दीनबन्धो करो अपनी दाया।।
दरश अपना दिखा दीजिये, आप अपना बना लीजिये।

भजन नं० -३४

लागा लागा चुनरिया में मेरे दाग।
घर जाऊँ कैसे , पिया पाऊँ कैसे।।लागा०।।
परमधाम में पिया सखिन संग रही खेल में भाग।
खेल खेल में हमनें पिया से लियो सखी दुख मांग ।।
बताऊँ कैसे, पिया पाऊँ कैसे।। लागा० ।।
मूल मिलावा पिया सखिन संग बैठी चरणों लाग।
भेज दियो मोय अक्षर खेल में फूटे मेरे भाग्य।।
दुखा पाऊँ ऐसे मैं बताऊँ कैसे।। लागा०।।
प्रीतम आये टेर बुलाये कहा सखी अब जाग ।
ए कोई तेरे साथी नाहीं जिनसे करे अनुराग।।
समझाऊँ कैसे अब बताऊँ कैसे।।लागा०।।
ले निजनाम चलो घर अपने पर आत्म में जाग।
'सेवक' मिल फिर प्रेम पिया से हिल मिल खेलो फाग।।
पिया पाऊँ ऐसे में बताऊँ कैसे।। लागा०।।

कृष्ण से प्यार-३५

कन्हैया से अगर 'सेवक' किसी को प्यार हो जाये।
पड़ी भव सिन्धु में नैया तेरी तो पार हो जाये।।
बताया कृष्ण गीता में त्याग कर सब शरण आजा ।

Shri Prannath Ji Pustkalay

सहस्त्र चौरासी चक्कर से तेरा उद्धार हो जाये।।
यही है सार भागवत का यही है ज्ञान गीता का।
प्यारे कृष्ण चरणों में तेरा अधिकार हो जाये।।
यही है सार शास्त्रों का, छोड़ सब कृष्ण का होजा।
'सेवक' सांवली सूरत का तो दीदार हो जाये।।

धामों की वन्दना-३६

धन्य भूमि भरत खण्ड की, नौतन पुरी शुभ धाम है।
निज धाम से आये धनी, कीन्हा वहां विश्राम है।।
'सेवक' उन नवतन धाम को, ममकोट कोट प्रणाम है।
बन्दौं महा मंगलपुरी, सूरत पुरी शुभ धाम है।
जहां प्रथम गादी पर विराजे, आप श्री धनी धाम है।।
मुक्ति देने जगत को, मंगलपुरी शुभ धाम है।
सेवक महा मंगलपुरी को, कोटिशः प्रणाम है।।
जहां साथ को मेला कियो, राखो न काऊ हाम है।
गुम्मट मन्दिर में लियो, फिर अखण्ड विश्राम है।।
'सेवक' उस गुम्मट वाले को, मम कोट कोट प्रणाम है।।।

भजन -३७

नाव मेरी आन फंसी मंझधार, धनी बिन कौन लगावे पार।
भव सागर जल अगम अपारा, टूटी नैया दूर किनारा।।
तुमने न गर दिया सहारा, डूब जाय मंझधार।
मोह माया का विकट अन्धेरा, काम क्रोध मद लोभ ने घेरा।।
और न कोई तुम बिन मेरा, हाथ गहो पतवार।
विकट बहे जहां विषय व्यारी, आकर फँस गई नाव हमारी।।
'सेवक' हैं हम शरण तुम्हारी, आके करो बेड़ा पार।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

सद्गुरू वन्दना-३८

मैने तेरे चरण की शरण गुरू लई, पार नैया हमारी लगा दीजिये।
राज कदमों में मेरे तन है जहां, कर कृपा उनमें आत्म जगा दीजिये।।
खेल ही खेल में मांग हमने लिया, खेल अक्षर दिखा दो हमारे पिया।
खेल में आके खेल मैं बन गई, खेल से आके हमको जगा लीजिये।।
अपने आत्म पती को गई भूल मैं, और दुनियां मे लाखों बनाये पति।
आज मिलकर के करते सभी दुरगती, साथ इनसे हमारा छुड़ा दीजिये।।
आज भव सिन्धु में मेरी नैया पड़ी, पार कोई किनारा दिखाता नहीं।

धनी शरण (राग ध्रुपद)३६

धनी तज चरण शरण कहां जाऊँ।
तुम बिन कोई और न मेरा जाको विनय सुनाऊँ।।
भूल हुई सो क्षमा करो धनी, बार बार गुहराऊँ।
विरह बेदना सही न जाती, कैसे तुम्हें बताऊँ।।
जब से बिछुड़ी सुख न पायो, निशदिन ही दुख पाऊँ।
तुम सबहीं की जानन हारे , क्या मैं तुम्हे बताऊँ।।
ऐसी कृपा धनी अब कीजे, मूल मिलावा पाऊँ।

श्री राज विनय-४०

श्री कृष्ण लाज रख मेरी, मैं शरण पड़ी हूं तेरी।
धनी तुमने बहुत समझाया,पर समझ न मेरी आया।।
तब मोय मान ने घेरी, श्री कृष्ण लाज रख मेरी।
ब्रज रास में पहिले आये, तब नित नेम खेल खिलाये।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

तब भ्रमति बुद्धि हुई मेरी, मैं शरण पड़ी हूं तेरी।
रास लीला आप खिलाये, निज धाम की याद दिलाये।।
हुई पूरण न इच्छा मेरी, मैं शरण पड़ी हूं तेरी।
माया ब्रह्माण्ड दिखाया, जहां झूठा खेल रचाया।।
'सेवक' मोय विपत ने पेरी, मैं शरण पड़ी हूं तेरी।

आत्म पुकार-४५

मेरे गुम्मट के स्वामी हो, मैंने तेरी शरण लई।
लोक लाज मरजाद जगत की, सब मैंने छोड़ दई।।
अक्षर खेल को हमने मांगा, हमसे भूल भई।
बार बार प्रभु आपने वरजी, मैं मत मन्द भई।।
चरणों तले बिठाय आपने, भेज विदेश दई।
भूल गई निजधाम आपको, ऐसी निठुर भई।।
जन्मत मरत बहुत दिन बीते, नित नई विपत सही।
माया अमल चढ़ो रस भारी, विषयन फांस लई।।
प्राणनाथ सतगुरू जब आये, टेर के मोय कही।
अक्षर खेल को देखन आई, खुद बन खेल गइ।।
दे निजनाम जगाई मोको, तब मोय सुरत भई।
धान धनी प्रभु धाम बुला लो, 'सेवक' हार गई।।

श्री राज वन्दना-४६

विनती करों श्रीराज तुम्हारी, राज तुम्हारी प्रभु जन हितकारी।
परमधाम में आप विराजे, ये श्यामा रानी छाजे।।
बारह सहस्त्र सखी संग राजे, सुन्दरसाथ छवी प्यारी।। विनती।

Shri Prannath Ji Pustkalay

सेन्दुरिया रंग श्यामा सारी, श्याम रंग कन्चुकी न्यारी।
लाही रंग घरनिया सोहे, मुकट, मणी छवि प्यारी।। विनती।।
राज तन सोहे केषरिया जामा, ओढ़े पीताम्बर है श्यामा।
माथे सोहे मुकट ललामा, मणि मुक्ता गल डारी।। विनती।
प्रभु चन्दा मैं बनी चकोरी,निरखो सदा युगल छवि तोरी।
बार बार विनवों कर जोरी, "सेवक" शरण तुम्हारी।विनती।।

धनी दरबार-४७

मन तुम चलो राज दरबार।
क्षर अक्षर के पार विराजे, जहाँ तेरे भरतार।टेक।।
दस मन्जिल को महिल बनो, जामे सोहे पूरब द्वार।
प्रथम भूमिका मूल मिलावा,शोभा अपरम्पार।।१।।
मध्य सिंहासन पिया विराजे, संग अंगना नार।
बारह सहस सखी संग राजे, झलकें ज्योति अपार।।२।।
आत्म अपनी जाग्रत करके,करो धनी दीदार।
जन्म मरण के बन्धन छूटे, हो जीवन उद्धार।।३।।
तारतम्य सतगुरु से लेकर, हो जा भव से पार।
परमधाम पच्चीस पक्षमें, "सेवक" करो विहार।।४।।
कवित्त-ऊपर से धोय तन खूब तूं सफाई करे,
अन्दर जो मैल तेरे निर्मल न कीन्हों है।
ऊपर को दिखाइये को तरह-२ भेष धरे,
अन्दर को दिल तूने प्रभु को न दीन्हों हैं।।
माया से ब्रह्म माने भ्रम में भुलानो फिरे,

Shri Prannath Ji Pustkalay

आत्मा को पती तूने कबहूं न चीन्हों है।
"सेवक" न चीन्हे जिनने पर से परे ब्रह्म,
उनने तो मानुष जन्म व्यर्था ही लीन्हों है।
कवित्त-चन्द्र के प्रकाश से तारा गण मन्द होत,
सूरज के प्रकाश से रजनी नस जात है।
धर्म को काम किये पाप को विनाश होत,
पुन्य न करवे से धन नश जात है।।
रोज-२ जाइवे से आदर को नाश होत,
आलश के करवे सो किसान नस जात है।
आश नश जात सबै कृष्ण की शरण होत,
"सेवक" कहें न पुर्नजन्म पात है।।

श्री राज ध्वनि-४८

राज राज श्री श्यामा श्याम,तुमको कोटि कोटि प्रणाम।।टेक।।
हे मम स्वामी हे श्रीराज, अब प्रभु राखो मेरी लाज ।
पूरण करो सब मन के काम, तुमको कोटि कोटि प्रणाम ।।
हे जीवन धन हे श्रीराज, दीजे हमको चरण जहाज।
जिससे आऊँ आपके धाम, तुमको कोटि कोटि प्रणाम ।।
मैं हारी धनी जीते आप, भूल हुई सो कीजे माफ।
चरण कमल में दो विश्राम,तुमको कोटि कोटि प्रणाम ।।
'सेवक' आया आपके द्वार, जीवन नैया कर दो पार।

गुम्मट वाले की याद में-४६

भूल हुई सो छमा करो अब, हे धनी गुम्मट वाले।

Shri Prannath Ji Pustkalay

बहुत कष्ट सहि चुकी प्रभु, पर अबतो पास बुलाले।।
हार गयी मैं प्रेम परीक्षा, आप जीत गये बाजी ।
जी चाहे सो करें आप प्रभु, मैं सब विध से राजी।।
इच्छायें सब पूरण हुई, अब कोई रहो न बांकी।
प्यासे नेत्र देखना चाहे, युगुल रूप की झांकी।।
सही न जाती विरह वेदना, हे धनी गुम्मट वाले।
सेवक पर कर कोर कृपा की, अब तो पास बुलाले।।

गुम्मट वाले की शरण –५०

तेरा आसरा है हमें गुम्मट वाले, मेरी जिन्दगी है अब तेरे हवाले ।
छमाकर दो स्वामी मैं पछता रही हूं, तेरे सामने थी कहां आ गई मैं।।
फंसी हूं भंवर में तूं आकर बचाले, तेरा आसरा है गुम्मट वाले।।
खेल अक्षर में आकर के मैं खो गई हूं भूल हमसे हुई अब मैं रो रही हूं।
तेरे सिवा कौन हमको निकाले, तेरा आसरा हमें गुम्मट वाले।।
आखिर हूं तेरी मैं जाऊँ कहां अब, अपनी विनय मैं सुनाऊँ कहाँ अब।
करके कृपा अपने दर पर बुलाले,तेरा आसरा है हमें गुम्मट वाले।।
परआतम हमारी तुम्हारी चरण में, जाग्रत करके लेलो तुम अपनी शरण में।
सेवक को अब तो वापिस बुलाले, तेरा आसरा हे हमें गुम्मट वाले।।
सद्‌गुरू स्वामी शरण तेरी, प्रभु लाज रखो अब देर न कीजे।
साखी –क्षमा करो अब गुण सगरे बुद्धि मेरी निर्मल कर दीजे।।
श्री राज चरण में प्रीत बड़े, प्रभु प्रेम लक्षणा भक्ति दीजै।
'सेवक' कर जोर करे विनती, मोपे दाया की कोर कृपा कर कीजै।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

श्रीकृष्ण वन्दन ५१

श्रीकृष्ण चरणों में लागी लगन।
छवी देखा आतम हो गई मगन।।
मोहनी मूरत सांवला बदन।
अंग अंग सोहे जाके पीतवसन।।
सिर पे मुकुट सोहे मोर के पखन।
माथे तिलक सोहे कुण्डल श्रवन।।
वैजन्ती मालगल में काजल दृगन।
अधर पान लाली जाकी मन्द हसन।।
हाथों में आरसी मुदरी अंगुरिन।
कमर कर धनी और नूपुर चरन।।
"सेवक" कृष्ण चरणों में करता नमन।
हृदय में विराजो मेरे राधा रमन।।

श्री राधे वन्दन ५२

राधे तेरे चरणों में सत्-सत् नमन।
सत्-सत् नमन राधे पग वन्दन।।
सुन्दर स्वरूप तेरा गोरा बदन।
साडी सेंदुरिया रंग सोहे वसन।।
सिर पे मुकुट जामे जड़े है रतन।
गलेमण माला और कुण्डल श्रवन।।
श्याम रंग कंचुकी स्वर्ण के फुंदन।
नीली चरनियां सोहे चरन।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

माथे पे वेन्दी और काजल दृगन।
अधर लाल लाली नाक में नथुन।।
हाथों में आरसी मुदरी अंगुरिन।
कमर करधनी और बिछुआ चरन।।
तेरी छवी देख मोहे कृष्ण।
इसीलिए कहते सभी राधा रमन।। राधे०।।
"सेवक" तेरे चरणों में करता नमन।
बार बार बन्दौ राधे युगुल चरन ।। राधे०।।

श्याम विनय ५३

श्याम दर्शन दिखाता क्यों नहीं।
मेरी बिगड़ी बनाता क्यों नहीं।।
आज मझधार में मेरी नैइया पड़ी।
पार इसको लगाता क्यों नहीं।।
आया तेरी शरण छोड़ संसार को।
फिर तू अपना बनाता क्यों नहीं।।
प्यासे दर्शन को तेरे हमारे नयन।
प्यास इनकी बुझाता क्यों नहीं।।
"सेवक" मिलने को व्याकुल ये दिल है मेरा।
अपने दिल से लगाता क्यों नहीं।।

राज ध्वनि-५४

राज श्यामा राज श्यामा, राज श्यामा बोल रे।
मोह निशा से जाग कर तूं अब तो आँखे खोल रे।।टेक।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

पर आत्म में जागकर, अपने को तूं पहिचान ले।
कल्याण अपना चाहिता, सतगुरू से जा गुरू ज्ञान ले।।
व्यर्थ में क्यों खो रहा है, स्वांस तूं अनमोल रे।
जिनको अपना मानता, ये तेरे साथी नहीं।।
कर कपट माया जो जोड़ी, साथ में जाती नहीं।
मोह का बन्धन पड़ा है, तू इसे अब खोल रे।।
क्यों तूं आया इस जगत में, कौन तेरा धाम रे।
भेद पायेगा तभी जब तू जपे, निजनाम नाम रे।
सेवक कर त्यागी चलन की, बज रहा है ढ़ोल रे।।

आत्मबोध चेतावनी-५५

सुमरन करले मेरे मना, साथी न कोई निजनाम बिना।। टेक।।
कौन कहां से तूं है आया, इसका भेद समझ न पाया।
माया में नित फिरे भुलाया, करता व्यर्थ कल्पना।।
पांच तत्व की तेरी काया, ये काया माया की छाया।
विषयों ने है तुझे फंसाया, देख रहा सपना।।
देखने आया जगत तमाशा, पलट गया पर तेरा पांसा।
तूं खुद ही बन गया तमाशा, भूल गया घर अपना।।
चाहे जितना जोर लगावे, बिन सतगुरू के निकल न पावे।
'सेवक' शरण गुरू की जावे, मिले मूल घर अपना।।

जागनी गीत -५६

अब तो जाग भाग माया से, सतगुरू आये जगाने को।
अपने आप को भूल गई तुम, अयो याद दिलाने को।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

माया के तन में तुम भूली, आये तुम्हें बताने को।
पर आत्म तेरे मूल मिलावा, उसमें सूरत जगाने का।।
जाग्रत ज्ञान तारतम्य लेकर, आये नींद उड़ाने को।
देर करन का समय नहीं चलो, अपने मूल ठिकाने को।।
बीत गया गर समय तेरा ये, हाथ नहीं फिर आने को।
'सेवक' तेरे आत्म पती खुद, आये मुक्ति दिलाने को।

जगनी गीत-५७

जागो सुन्दरसाथ हमारे, मोह निशा के सोवन हारे।। टेक।।
जब से धाम से तुम हो आये, मूल वतन की याद भुलाये।
बैठे धनी उत आश लगाये, सोते ही तुम पैर पसारे।।१।।
जागो नूतन हुआ सवेरा, धाम धनी ने कीना फेरा।
तारतम्य दे तुमको टेरा, सतगुरू ठाढ़े तेरे द्वार।।२।।
देर करन का समय नहीं है, दया धनी की वरण रही है।
मधुर मिलन की घड़ी यही है, मिलने को धनी हाथ पसारे।।
चरण शरण धनी की सुखदाई, जो जावे सो मुक्ति पाई।
'सेवक' क्यों नही देत दिखाई, लेने आये धनी तुम्हारे।।४।।
सवैया- मोर मुकट मकरा.त कुन्डल, गल बैजन्ती माला।
पीताम्बर तन ऊपर सोहे,रूप बना क्या आला।।
मधुर तान मुरली की सुनाकर, मोह लई ब्रज वाला।
'सेवक' क्यों नही देत दिखाई, लेने आये धनी तुम्हारे।।४।।
सवैया- मोर मुकट मकरा.त कुन्डल, गल बैतन्ती माला।
पीतपम्बर तन ऊपर सोहे, रूप बना क्या आला।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

"सेवक" का स्वामी प्रभु तूं ही, मोहन मुरली वाला।।

श्री प्राणनाथ का सन्देश-५८

प्रणनाथ ने सुन्दरसाथ को, दिया अमर सन्देश।
अपने धाम को चलो सुहागिन, छोड़ स्वप्न का देश। टेक।।
जिसको अपना समझ रहा तूं, ये तो देश विराना है।
एक दिन इसको छोड़कर मुझको, निश्चय होगा जाना है।।
यह साथी तेरे साथ न देंगे, जिनको अपना माना है।
फिर क्यों विषयों में फंस करके, खोता स्वांस खजाना है।।
जिस काया पर गर्भ करे तूं, रहनी नहीं हमेश है।।१।।
कामादिक वट मार यहां पर, तुझको सभी फंसाये हैं।
मोक्ष दिलाने को माया से, प्राणपिया तेरे आये हैं।।
तेरे कारण परमधाम से, तारतम्य निध लाये हैं।
क्षर अक्षर के परे मूल घर, आकर हमे बताये हैं।।
तारतम्य का तार मिलाकर, चलो आपने देश है।।२।।
परमधाम पच्चीस पक्ष, जो सब विधि आनन्दकारी है।
दस मन्जिल को महिल बनो, जामे सुन्दर पहिल अटारी है।।
प्रथम भूमिका मूल मिलावा, मध्यसिंहासन भारी है।
श्यामा सहित श्री राज विराजे, शोभा अगम अपारी है।।
अपने तन में जाग्रति होकर, दरशन करो हमेश।।३।।
श्यामा रंग पहिने कंचुकी, सेन्दुरिया रंग सारी है।
लाहीरंग की पहिने चरनिया, मुकट मणि छवि न्यारी है।।
श्वेत रंग पिया जामा पहिने, केशरिसा रंग इजारी है।

Shri Prannath Ji Pustkalay

रंग अशमानी पिछौरी ओढ़े पटिका श्याम रंग भारी है।।
युगुल रूप के दर्शन करके, "सेवक" कटें कलेश।।४।।

श्रीकृष्ण वन्दना (गज़ल)-५६

मोहन छोड़कर तुमको, बता दो हम कहां जायें।
शरण में आ चुके तेरे, वो दीवाने कहां जायें।।१।।
जुल्म दिन रात सहते हैं ,न मुख से आह करते हैं।
भरा जो दरद है दिल में,दिखाने हम कहां जायें।।
हमारी लाज और ईमा, सरे दरम्यान लुटती है।
बता दो हम को ऐ मोहन, बचाने हम कहां जायें।।
सुनायें भी तो हम किसको, न कोई सुनने वाला है।
दास्तां जो मेरे गम की, सुनाने हम कहां जायें।।
दया सिन्धो कोई तुमसा,नहीं देखा जमानें में।
तेरे सेवक की जो बिगड़ी,बनाने हम कहां जायें।।

हृदय उद्गार (गजल) ६०

हमें धनी तेरे चरणों का, सहारा मिल गया होता।
अगम भव सिन्धु सागर से,किनारा मिल गया होता।।
जब से आप से बिछुड़ी, अनेकों कष्ट पाये हैं।
सभी गम दूर हो जाते,तेरा दर मिल गया होता ।।
नहीं अब चाहिये हम को , कोई संसार का वैभव।
मेरी आत्मा जो जग जाती,इशारा मिल गया होता।।
यही अन्तिम मेरी इच्छा, दया की गर नजर करदो।
सेवक आनंद का भण्डार, फिर से मिल गया होता।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

दोहा– परमधाम पर से परे,जहां बसे श्रीराज।
बारह सहस सखियन सुदा, श्यामा रही विराज।।

जागनी गीत (गजल) ६१

उठो अब नींद को त्यागो,परमपद तुमको पाना है।
रचा परपंच माया का,तूं इसमें क्यों भुलाना है।
जाग निज धाम को चीन्हों,जहां से आये हो प्यारे।
जिसे अपना है तू समझे, देश ये तो विराना है।।
तेरी ये आत्मा क्या है,यहां पर क्यों तू आई है।
न जब तक अपने को जाने,नही तब तक ठिकाना है।।
शरण सतगुरू की आकर के,उड़ा दो नींद का परदा।
सेवक निजनाम को ले लो, जो तुमको मुक्ति पाना है।।

अन्तिम इच्छा (गजल) ६२

यही इच्छा धनी मेरी,कि तेरा दरश मिल जाये।
तुम्हारे कोमल चरणों का, हमें स्पर्श मिल जाये।
आपके ही तो चरणों में ,पर आत्म हमारी है।।
दया कि गर नजर कर दो, स्वप्न से आंख खुल जाये।
हटे जो नींद का परदा , जुगुल जोड़ी का हो दर्शन।
छवी जब आपकी देखूं,हृदय का कमल खिल जाये।।
आपके साथ फिर विलसू,पच्चीस पक्षों में।
सेवक आनन्द का फिर से हमें, भण्डार मिल जाये।।
साखी- हे कृष्ण करूणा सिन्धु प्रभु, निज दूर ये माया करो।

Shri Prannath Ji Pustkalay

निज हाथ रख कर शीष पर, आप धनी निज छाया करो।।
सेवक बुलाये दीन तुमको, नाथ तब आया करो।।

आत्म पुकार (गजल) ६३

श्री राज कहैं क्या हम तुमसे, अब कैसे गुजारा करते हैं।
जब याद तुम्हारी आती है, रो रो के पुकारा करते हैं।।
हैं बार- बार मरते जीते, जाने कितने दिन हैं बीते।
जिस ओर कदम धनी मैं रखते,बस दुख ही निहारा करते हैं।।
दुख देख के मैं अब कथित हुई दुख सहिन नहीं अब होते है।
प्रभु भूल हुई सो छमा करो, तेरी ओर निहारा करते हैं ।।
सेवक ये करता विनय धनी, अब अपने पास बुला लीजे।
मैं दासी हूं तेरे चरणों की, बस तेरा सहारा करते हैं।।

जागनी गीत-६४

आये हैं श्री जी मुक्ति दिलाने के लिये।
आओ चलें उनकी शरण निज धाम पाने के लिये।।
तेरे कारण ही धनी आये इस संसार में।
लाये हैं निधि तारतम्य तुमको जगाने के लिये।।
छोड़कर निज धाम तुम माया जगत में गई।
अपने घर वापस चलो आये बुलाने के लिये।।
जिनको अपना मान बैठी ये तेरे साथी नहीं।
सेवक जो साथी धाम के उनसे मिलाने के लिये।।
कवित्त-नवतनपुरी के दर्शन कर नये तन प्राप्त करो,
मायारूपी तनों की याद को भुलाइये।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

महामंगल पुरी के दर्शन कर, मंगल हो जीवन का,
धनी के चरणों में चित्त को लगाइये।।
मुक्ति पीठ के दर्शन कर,मुक्ति को प्राप्त करो।
तारतम्य लेकर तम को मिटाइये।।
ध्यानश्री चरणों का, वाणी का नित्य पाठ।
सेवक विश्राम फिर मूल घार पाइये।।

जगनी गीत (गजल)-६५

उठ जाग सुहागिन क्यों सोवे, अब भोर भयो पिया आये हैं।
निज धाम से निज तेरे प्राणपती, निज नाम की पाती लाये हैं।।
ब्रज रास में पहिले तुम्हें मिले, नित नित नये खेल रचाये ।
फिर रास रमण कर तेरे संग,लेकर निजधाम सिधाये हैं।।
इच्छा न पूर्ण तुम्हारी हुई, प्रगटी पुनः जग में तुम आकार ।
जब भूल गई तुम माया में, तब पिया जगावन आये हैं।।
अब देर करन का समय नहीं, सतगुरू से चल गुरूज्ञान को ले।
सेवक निज नाम से धाम मिले, पिया यही सन्देशा लाये हैं।।

आत्म पुकार (गजल) ६६

दोहा- कौन भूल हमसे हुई है, मोहल ब्रजराज।
जा कारण मैं भटकती, भव सागर में आज।।

हे कृष्ण तुम्हारी दुनियां में, क्यों भक्त सताये जाते हैं।
तेरे हो करके हे मोहन, फिर क्यों इतना दुख पाते हैं।।
दिन रात जुल्म जो करते हैं न नाम तुम्हारा लेते हैं।
उनके दिन गुजरते मस्ती में, दिन रात वो मौज उड़ाते हैं।

Shri Prannath Ji Pustkalay

आखिर तेरी इस दुनिया में, अन्याय की पूजा क्यों होती।
दुष्टों को पूछता कोई नहीं, निरदोष फंसाये जाते हैं।।
लेते हो परीक्षा भक्तों की, दुःख पर दुःख उनको देते हैं।
वह तेरा नाम लेकर मोहन,सब क़ष्ट उठाये जाते हैं।।
यह अन्तिम विनय है सेवक की, अब और परीक्षा मत लीजे।
अब मुक्ति दिलावो माया से, अब कष्ट सहे नहीं जाते हैं।

आत्म निवेदन(गजल) ६७

टूटी हुई दिल की आहों ने, श्री राज पुकारा है तुमको।
मैं दासी हूं तेरे दर की, फिर काहे विसारा है मुझको।।
हुई भूल जो तुमसे हमने धनी,अक्षर खेल को मांग लिया।
चरणों के तले बिठा करके,परदेश में डारा है मुझको।।
थी मूल मिलावा में बैठी, जब आंख खुली धनी पास नहीं।
अपना कोई साथी न दीखे,गैरों मे डारा है मुझको।।
झूठे इस जग के मेले में,सब मतलब के साथी देखे।
वे मतलब साथी कोई भी, देता न सहारा है मुझको।।
तेरी मेरी में उमर गई,जीवन की शाम अब खत्म हुई।
"सेवक" की आत्म जागृति कर दो, तो दरश तुम्हारा हो मुझको।।

जागनी गीत (गजल) ६८

आये जागने को धनी,निज नाम देकर चल दिये।
प्राणपति निज साथ को, अपने जगाकर चल दिये।।
आतम धनी निजधाम से, आये पुरी नवतन में है।
देके जाग्रति ज्ञान फिर, मंगलपुरी को चल दिये।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

मंगलपुरी में प्रथम गादी पर, विराजे आप फिर।
साथ सुन्दर को जगा कर,आप आगे चल दिये ।।
नौतन पुरी से पद्मापुरी तक जागनी धनी ने करी।
सुन्दरसाथ को करके जमा,मेला लगाकर चल दिये ।।
ले समाधी प्राणपति, सब काम दे छात्रसाल को।
जागनी का भार सेवक साथ साथ को दे चल दिये ।।

श्रीजी शरण (गजल) ६९

शरण अपनी बुला लो धनी अब, दूर रहना गवारा नहीं है।
तेरे दर के प्रभु अब अलावा, कहीं पर गुजारा नहीं है।।
आँख उठाकर जिधर देखता हूं, मोह माया का दर देखता हूँ।
बेमतलब कोई दूर जहां में,देता सहारा नहीं है ।।
ऐसा माया ने फंसाया है हमको, प्रभु बिल्कुल भुल बैठे तुमको ।
मन विषयों में ये रम रहा है, अब निकलने का चारा नहीं है।।
'सेवक' अपनी शरण में बुलालो,भूल हमसे हुई वो भुलादो।
मोक्ष माया से आकर दिलाये, कोई तुमसा निहारा नहीं है ।।

मुक्ति मार्ग(गजल) ७०

मुक्ति सतगुरू से तुमको मिलेगी, क्यों भटकता इधर या उधर है।
जिसको अपना है तूं मान बैठा, किराये का ये तेरा घर है।।
ये सतगुरु ने आके बताया, खेल अक्षर का देखन तू आया।
माया ने मुझको ऐसा फंसाया, भूल अपना गया मूल घर है।।
प्रेम की देने आया परीक्षा,खेल अक्षर कि की तूने इच्छा।

Shri Prannath Ji Pustkalay

जान करके तूं इसमें है उलझा, ढूढ़े मिलती न तुझको डगर है।।
बीत सदियाँ गई तुझको आये, गोता भव बिन्धु के तू लगाये।
लेने को है धनी तेरेको आये, खोलकर अपनी देख नजर है।।
मन्त्र निजनाम लेकर के आये, सोते साथी सभी हैं जगाये।
जो भी उनकी शरण में हैं आये, सेवक उनको मिला मूलघर है।।
दोहा- मैंने अपनी सौंप दी, राज चरण मे डोर।
मेरा है रक्षक तुहीं, नटवर नन्द किशोर।।

जागनी गीत (गजल) ७१

उठो अब जाग कर देखो, जगाने राज आये हैं।
दिलाने याद निज घर की, सन्देसा आज लाये हैं।।
मिलाना मूल में बैठी, स्वप्न में देखते हो तुम।
जाग कर अपने को चिन्हों, बताने राज आये है।।
न कोई काम आयेंगे, जिन्हें अपना समझती हो।
ये माया मोह का फंदा छुड़ाने काज आये हैं।।
न तेरा दुख गया देखा, तेरे श्री राज प्यारे से।
मन्त्र निजनाम को लेकर, तेरे सरताज आये हैं।।
शरण सतगुरू की जाकर के, उड़ादो नींद का परदा।
बड़े हैं भाग्य 'सेवक' के, जो अपने राज पाये हैं।।

जागनी गीत (गजल) ७२

तूं क्यों भुलाया विषयों में, श्री राज को भजता नहीं।
ठोंकरें दिन रात खाये, फिर भी संग तजता नहीं।।
मात पितु और भ्रात तेरे, स्वार्थ के सब मीत हैं।

Shri Prannath Ji Pustkalay

जनकर के फिर फंसा क्यों,साथ तूं तजता नहीं।।
दुख रूपी संसार को मांगा तूने श्री राज से।
अक्षर रूपी परदा दीना डार तब श्री राज ने।।
ऐसा खोया नींद में तूं नींद को तजता नहीं।
इस जगत से मन हटाकर,श्री राज चरणों जोड़ दे।।
माया का परदा पड़ा है, तूं इसे अब तोड़ दे।
सेवक स्वामी जो तेरे, क्यों उन्हें भजता नहीं।।

आत्म पुकार (गजल कव्वाली) ७३

राज चरणों में चित को लगाये जायेंगे।
अपनी आत्म को अब हम जगाये जायेंगें।टेक।
धनी की मेहर से सतगुरू का हमें दरश मिला।
ब्रह्म ज्ञान मिला चरणों का स्पर्श मिला ।।
उनकी सेवा में मन न लगाये जायेंगे।
अपनी आत्म को अब हम जगाये गे।।१।।
बताया मुक्ति मार्ग और है निजनाम दिया।
क्षर अक्षर के परे ज्ञान वो अगम्य दिया।।
छोड़ माया जगत निज धाम जायें गे।
अपनी आत्म को अब हम जगाये जायें गे।।२।।
दिखाया परमधाम व बता निजधाम दिया।
विराजे मूल मिलावा तेरे प्राण पिया।।
अब तो उनके दरश आठो याम पायें गे।
अपनी आत्म को अब हम जगाये जायेगें।।३।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

आठ सागर लखी आठ थीं भूमिका।
और दर्शन किया पच्चीस पक्ष का।।
राज चरणों में "सेवक" विश्राम पाये गे।
अपनी आत्म को अब हम जगाये जायें गे।।४।।
दोहा- हम तो हाथ हुकम के, हुकम आप के हाथ।
जैसे इच्छाआपकी, वैसा कीजे नाथ।।

श्रीराज शरण (कब्बाली)- ७४

मिल गई है शरण जब श्रीरज की,
दूसरे की शरण अब नहीं चाहिये।
निधि मिली है हमें जब परमधाम की,
झूठी दुनियाँ की दौलत नहीं चाहिये।।१।।
हट गई थी नजर जब श्री राज की,
दूसरे की नजर अब नहीं चाहिये।।२।।
बीत सदियां गईं आये निज धाम से,
मोह माया में आकर के मैं फंस गई।
लाख कोशिश करी पर निकल न सकी,
ऐसी नाबूद दुनियां नहीं चाहिये।।३।।
मन्त्र निजनाम जब सतगुरू ने दिया,
मोह का आवरण जब मेरा हट गया।
हाथ को जोड़ "सेवक" ये कीने लगे,
वापसी की इजाजत हमें चाहिये।।४।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

कवित्त - ७५

कुन्ज के बिहारी जो विहार करें कुंजन में,
कुंजन में मुरली अधरा धर बजाते हैं।
कुंज के बिहारी नित ग्वालन को साथ ले,
कुंजन में जाके नित गौवों को चराते हैं।।
कुंज के बिहारी नित्य कुंजन में जाय के,
गोपिन से छीन छीन माखन को खाते हैं।
कुंज के बिहारी लख शरद पूर्णिमा की रात,
"सेवक" जा कुंजन में रास को रचाते हैं।।

अमर निध (कव्वाली)- ७६

मेरे गुरू ने अमर निध दई तारतम्य,
मिट अन्धेरा गया रोशनी मिल गई।
ज्योति ऐसी जगी तारतम्य ज्ञान की।
जिससे जीवन की हेरि कली खिल गई।।१।।
मोह निशा की अन्धेरी गहिन रात थी,
जिसमें बेहोश होकर के सोई थी मैं।
देके निजनाम गुरू ने जगाई जभी,
नींद मेरी सदा के लिये खुल गई।।२।।
ज्ञान हमको हुआ अपने निजधाम का,
खोल अक्षर का मैं देखने आई हूं।
भूल अपने को मैं थी गई खोल में,
गुरू की कृपा से मेरी अकल खुल गई।।३।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

सुरता निजनाम लेकर के आगे बढ़ी,
मूल मिलावा में जाकर के पहुंची जभी।
हमको दर्शन युगुल रूप के तब हुये,
"सेवक" खोई हुई फिर से निध मिल गई।।४।।

दोहा- बुद्धि हीन तन जान के, सुमिरों प्राण अधार।
आवागमन मिटाय कर, दीजे निज दरवार।।

गुम्मट वाले की याद में (कव्वाली)-७७

कौन कहता चला प्राण प्यारा गया,
वो तो गुम्मट के मन्दिर में मौजूद है।
तिनकी सच्ची लगन उनको होगा दरश।
आज भी वो तो गुम्मट में मौजूद है।।१।।
येहै श्रीजी का कहना वो सुन लीजिये,
माया से मन हटा ध्यान इधर दीजिये।
मुझसे मिलवे की गर ाह दिल में तेरे।
तेरे कारण ही गुम्मट में मौजूद है।।२।।
नित्य वाणी पढ़ो तुम श्री राज की,
और निजनाम का जाप हरदम करो।
आवरण इससे माया का हट जायेगा।
प्राण प्यारा तेरे दिल में मौजूद है।।३।।
साथ सुन्दर की सेवा करो करो हर समय,
"सेवक" उपदेश श्री जी ने ऐसा दिया।
उनकी सेवा से दर्शन मिलें गे तुम्हें।
उनके ही धाम दिल में वो मौजूद है।।४।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

साखी- श्री निषलंक विजया अभिनन्दन,चरणकमल की आश मुझे।
आत्म मेरी जाग्रत करदो, तब दर्शन की प्यास मुझे।
लग्न लगी प्रभु कब देखेंगे, चरण कमल रतनारे जो।
"सेवक" शरण हमें कब लोगे, महामति प्राणन प्यारे हो।।

जागनी गीत (कव्वाली)-७८

आंख को खोल कर तू सखी देख ले,
हैं जगाने पिया तेरे आये हुये।
जाग कर उनके चरणों में प्रणाम कर,
हैं लेने पिया तुझको आये हुये।।१।।
तमने वादा किया था उसे याद कर,
मैं ना भूलूंगी दुख रूपी संसार में।।
अपने वादे को अब तू गई भूलकर।
मोह सागर में गोते लगाये हुये।।२।।
झूंठे संसार में इस तरह फंस गई,
याद अपनों की तुझको है आती नहीं।
क्या कहूं ये बड़ी शर्म की बात है।
फिरती गैरों को अपना बनाये हुये।।३।।
मान "सेवक" का कहना समय है अभी,
अपने आत्म पती को तूं पहिचान ले।
तेरे कारण ही आये धनी धाम से।
मन्त्र निजनाम है साथ लाये हुये।।४।।

सवैया- गौ कोटिन दान करो काशी, चाहे गंगा मेंनित जाय नहाओ।

Shri Prannath Ji Pustkalay

कल्पवास प्रयाग करो, त्रिवेणी में डुपकी नित्य लगाओ।।
गा भूमि को दान करो नित नित,तीरथन में नित समय बिताओ।
जो फल कृष्ण को नाम लिये, सो फल "सेवक" अन्त न पाओ।।

नन्द नन्दन श्रीकृष्ण (कब्बाली)-७६

नन्द नन्दन बने गोकपयों के लिये,
पार ब्रह्मा भी है जिनके पाये नहीं।
खोज करके थके सारे ऋषि मुनि जिसे।
पर पता उस प्रभु का है पाये नहीं।।१।।
सहस मुख से रटे शेष हर दम जिसे,
ध्यान में हैं कभी उनके आये नहीं।
आये लेने तुम्हें वो धनी धाम के,
फिर समय हाथ है ऐसा आऐ नहीं।।२।।
लेके निजनाम अपने चलो धाम को,
चलो उनकी शरण जन्म पाये नहीं।
"सेवक" मुक्ति मिलेगी सदा के लिये।
लौट कर के कभी फेर आये नहीं।।३।।

श्रीराज वन्दना-८०

हे पावन परवेश्वर कैसे पास तेरे मैं आऊँ।
छमा करो जो भूल हुई धनी ये कहते शरमाऊँ।।१।।
आपने वरजी मै ना मानी अब रोऊँ पछताऊँ।
छूट गया घर परमधाम सा कैसे उसको पाऊँ।।२।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

मोह सागर की अगम धार में अब डूबूं उतराऊँ
हाथ पकड़कर आप निकालों कहीं डूब न जाऊँ।
पार अवश्य मैं हो जाऊँगा मेहर आपकी पाऊँ।
अपनी शरण अब तो बुला लो सेवक विनय सुनाऊँ।।४।।

मुक्ति पीठ पद्मावतपुरी-८१

साथ सब दर्शन कर लेव आय, विराजे गुम्मट में श्रीराज।टेक।।
बिन्द पीठ पदमावती सोहे, गुम्मट बंगला जहां बनों है।
धर्म केन्द्र जो जागनी को है, बनवायो छत्रसाल महाराज।वि०२।।
सामने बंगला साहब सोहे, देखत ताय मोर मन मोहे।
रास चबूतरा पास में सोहें, जहा। रास रचो श्रीराज।वि०२।।
आसपास सुन्दरसाथ की बैठक, चारों ओर द्वार सोहे सुन्दरा।
धर्मध्वजा फहराय अन्दर, स्थपित कियो श्रीराज।वि०३।।
पश्चिम ओर बाई राज को मंदिर, मेहर सागर सोहे जाके अन्दर।
जो स्नान करे साथी सुन्दर, सुफल होय सबकाज।वि०४।।
पास सोहे सुरसर की धारा, चरण धोय धनी जिसमें डारा।
जो पीवे होवे भव पारा, भव भय जायें सब भाज।वि०५।।
चौपड़ा मन्दिर बन बीच सुहायों,छत्रसाल जहा।दर्शन पायों।
अपनी हवेली में लै आयौ, तिलक किया श्री राज।वि०५।।
गंगा जमुना पास में सोहे, प्रगटी जो श्री चरणन सोहे।
कर स्नान चरणामृत लीहें, सिद्ध होय सब काज।वि०७।।
धनी समाधी गुम्मट मन्दिर, पन्जा छाप सुहाय रही ऊपर।
बलि बलि जाऊँ मै जाके ऊपर, कृपा करो श्री राज।वि०८।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

होती अष्ट पहिर की पूंजा, प्रभू समान कोई और न दूजा।
"सेवक" सब तज उनका होजा, मिले तोय श्री राज।।वि०६।।

साखी - श्री प्राणनाथ के धर्म में, जो लावे ईमान।
छत्रसाल तिन ऊपर, तनमन धन कुरवान।।

आत्म निवेदन (गजल कब्बाली)-८२

मै हूं चरणों की दासी, तुम्हारी धनी,
भूल हमसे हुई छमा कर दीजियैं
मैं विरह वेदना मै जली जा रही
मेहर उमृत की वरषा अब कर दीजिए।।१।।

फिर से पाऊँ चरण की शरण मैधनी,
जान अपनी मुझे इतना वर दीजिए।

मै बहुत सहि चुकी अब विरह वेदना,
सहिन शक्ति मेरी साथ देती नही।

तेरे दर पर खड़ी मै भिखारिन बनी।
झोली खुशियों से अब मेरी कर दीजियें।

आप चरणो में जब पर आतम मेरी,
जाग्रति उनमें सुरत मेरी कर दीजिये।

"सेवक" पाऊँ मै आनन्द परमधाम कें।
धनी इतनी कृपा अब तो कर दीजिये।।४।।

सवैया- आओ श्री राज, राखो "सेवक" की लाज
डूब रही आज भव सिंन्धु बीच नैइया है।
छूर है किनारा, अगम बहे जाकी धारा,

Shri Prannath Ji Pustkalay

कोई और न हमारा, पीर को हरैया है।।
भाई पितु और मात, करे मतलब का साथ,
आज कोई न दिखात, टेर को सुनैया है।।
नाथ कीजे न अवार, कहे सेवक पुकार,
हाथ लेके पतवार,पार करो मेरी नैया है।।

दया की नजर (कब्बाली) ८३

हे धनी कष्ट हमने बहुत सहि लिये।
अब तो अपनी दया की नजर कीजिए।।१।।
कर क्षमा दीजिए भुल हमसे हुई।
आप अपना दरस जल्द अब दीजियें।।२।।
बहि रहा हूँ अगम धार संसार में।
आप अपना समझ बाह गहि लीजियें।।४।।
मै अंगना आप की आप हमारे धनी।।
'सेवक' को अब तो अपनी शरण लीजिये।।४।।

गोपियों का कृष्ण प्रेम (कब्बाली) ८४

धन थी गोपियां वो ब्रज धाम की।
कृष्ण चरणों में रहती थी जिनकी नजर।
श्याम रंग में रंगी इस तरह गोपियां।
श्याम हीश्याम आते थे उनको नजर।।१।।
सारे गृह काज करती हुई रात दिन।
ध्यान रखती स[illegible] कृष्ण के चरणों में।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

रस भरी बंशी जिस दम बजी श्याम की।
दौड़ आई वो घरबार को छोड़कर।।२।।
गौ की खुर की तरह लाघ संसार कों।
आई मुरली बजाते जहां मुरली धर।।
रास मिल कर किया फिर श्रीकृष्ण नै।
'सेवक' लेकर गये अपने निज मूल घर।।३।।

अमृत प्याला (भजन) ८५

पीले पीले सुन्दरसाथ धनी लाये अमृत का प्याला।
स्वांस स्वांस निज नाम को पीके होजा मतवाला टेक।।
प्रथम पिया श्री देवचन्द्र ने ये अमृत प्याला।
दे निजनाम हृदय में बस गये मोहन नन्द लाला।।१।।
गांगजी भाई ने फिर पीना देवचन्द्र से प्याला।
तन मन धन सब अर्पण कर घर मन्दिर कर डाला।।२।।
मेहराज ठाकुर ने फिर पीना सत्‌गुरू से प्याला।
पंच स्वरूप मिले एक रस हो गये महामति मतवाला।।३।।
छत्रसान ने प्राणनाथ से फिर पीना यह प्याला।
गुरू भक्ती उन ऐसी कीनही। सब कुछ दे डाला।।४।।
सुन्दरसाथ जो पिये प्रेम से ये अमृत प्याला।।
'सेवक' आवागमन नमावे मिले परमधाम आला।।

आत्मा पुकार(गजल) ८६

दरश तेरा धनी मुझको अगर एक बार हो जाये।
पड़ी भव सिंन्धु में नैइया हमारी पार हो जाये।।१।।

Shri Prannath Ji Pustkalay

कभी है काम की ज्वाला कभीहै क्रोध की आंधी।
हटा दो दिल से तुम तृष्णा ता बेड़ा पार जाये।।२।।
फंसाये बैठे है यहां पर हमको मोह और मत्सर।
चरण रज तेरी मिल जाये तो इनका छार हो जाये ।।३।।
हटा दो नीदं का परदा धनी गर मेरे दिल से।
'मेवक' फिर राज श्यामा का हमें दीदर होजायं ।।४।।

जगनी गीत-८७

इस मधुर जगानी बेला में, हमें तुम्हें जगाने आये हैं।
उस प्राणनाथ प्रभु प्यारे का, सन्देश सुनाने आये हैं।।
सीता है तु पैर पसारे, मोह नीद ने घेराहैं।
आखँ खोल कर देख बावरे, नूवन हुआ सवेराहै।।
जिनकों अपना समझ रहा तूं करता मेरा मेराहै।
ये साथी कोई साथ न देगें , लख चौरासी फेरा है।।
आवागमन मोह का बन्धन, उसे छुड़ाने आये है।।उस०१।।
सदियों से तूं भटक रहा है। लेकर झूठी अभिलाषा।
विषयों का मधु पान करने को, हरदम फिरता है प्यासा।।
झूठी दुनियांदारी में फंस, पलट गया तेरा पांसा।।
आत्म पिया को भूल गया तूं, झूठे जग की ले आशा ।।
भूल गया घर मूल तू अपना, उसे बताने आये है।। उस ०२।।
परमधाम पच्चीस पक्ष का, जहां मूल घर तेरा है।

Shri Prannath Ji Pustkalay